संक्षिप्त

1. मानवीय शिक्षा राष्ट्रीयता एवं अर्थव्यवस्था का प्रस्ताव मानवीय सचेतना-पूर्णसंस्कृति, सभ्यता एवं उसकी निरंतरता के अर्थ में है, जो स्वयं में सामाजिक, आर्थिक एवं राज्यनैतिकता का सम्मिलित रूप है।

2. शिक्षा के द्वारा प्रत्येक विद्यार्थी मे उसकी प्रतिभा एवं व्यक्तित्व को संतुलित रूप मे विकसित करने के साथ ही अधिक उत्पादन एवं कम उपभोग करने की क्षमता, योग्यता तथा पात्रता को स्थापित करने का प्रावधान है। जिससे -

   (क) प्रत्येक व्यक्ति व्यवहार में सामाजिक तथा व्यवसाय में स्वावलम्बी होगा ।

   (ख) विद्यार्थियों में नौकरी की मानसिकता समाप्त होगी और व्यवहारिक उद्यमशीलता के संकल्प का उदय होगा ।

   (ग) मानवीयता पूर्ण व्यवहार सुलभ होगा फलतः अपराध अति-भोग एवं बहुभोग प्रवृत्तियाँ दूर होंगी ।

3. मानवीय राष्ट्रीयता में जनवादिता, उत्पादनीयता एवं विकास-शीलता सम्बन्धी अध्ययन सुलभ हुआ है: जिससे -

   (क) मनुष्य जाति और वर्ग की भावना से दूर होकर मानव में जाति, धर्म, कर्म एवं व्यवहार मे अखण्डता की प्रतिबद्धता तथा उसकी निरंतरता स्थापित होगी ।

   (ख) राष्ट्रीय अखण्डता एवं उसकी अक्षुणता निर्बाध रूप में रहेगी।

   (ग) समाज मूल्यो का आचरण होगा, फलतः अनैतिकता दूरहोगी एवं नैतिकता का वैभव होगा।

   (घ) मनुष्य का मनुष्य के साथ विश्वास निरंतर रहेगा जिससे अराजकता, उद्दण्डता, द्रोह एवं विद्रोह दूर होंगे ।

   (ङ) अभयता सिद्ध होगी जिससे मनुष्य-मनुष्य की परस्परता में भय दूर हो जायेगा।

4. मानवीय अर्थव्यवस्था के अध्ययन में व्यवहार एवं व्यवसाय मूल्यों को संतुलित रूप में निर्धारित करने एवं वहन करने का प्रावधान है: जिससे -

   (क) न्याय सुलभता एवं विनिमय सुलभता व्यवहारिक रूप में सिद्ध होगी ।

   (ख) सहज रूप में मूल्यों का विकास, सदुपयोग एवं सुरक्षा मनुष्य के आचरण के रूप में प्रचलित होगी ।

   (ग) शोषण एवं संग्रह की प्रवृत्तियाँ दूर होंगी ।

इसी से-

नित्य मंगल होगा

15 अगस्त, 1982

ए. नागराज शर्मा,
श्री भजनाश्रम, श्री नर्मदांचल
अमरकंटक, जि०-शहडोल